तुर्क साम्राज्य संस्थापक :- कुतुबुद्दीन ऐबक

में मुस्लिम सम्राज्य का संस्थापक भी माना जाता है।
वास्तविकता यह है की इसी इस्लामिक साम्प्रदायिक राज्य की स्थापना के स्वरूप मात्र ही पिछले 500 वर्षो में विभिन्न मुस्लिम विद्वानों ने भारत पर आक्रमण करते जा रहे थें, जिनका सफलतापूर्वक प्रतिकार भारत के स्वतंत्रता प्रेमी राजाओं और उनकी प्रजा के द्वारा किया जा रहा था।

इस प्रतिकार के विषय में रामधारी सिंह दिनकर अपनी पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय में वर्णित किया है। "इस्लाम केवल नया मत नहीं था। इस्लाम हिन्दुत्व का ठीक विरोधी मत था।

इसके तत्पश्चात् कुतुबुद्धिन ऐबक ने जयचन्द्र से युद्ध की तैयारी की :

कुतुबुद्धिन ऐबक ने जब भारत में प्रवेश किया तो उसने भी इसी परम्परा का वहन किया और भारतीय धर्म एवं संस्कृति का सर्वनाश कर इस्लाम का परचम फहराना अपना उद्देश्य घोषित किया। उसे अपने इस उद्देश्यपूर्ति में बाधा के रूप में जयचन्द्र दिखाई दिया, तो उसके सर्वनाश के लिए उसने गोरी के आदेशानुसार योजना बनानी आरंभ की। गोरी ने उसकी योजना से सहमत होकर एक सेना जयचन्द्र के सर्वनाश के लिए भेजी

कन्नौज का शासक जयचन्द्र, उस समय उसका अधिपत्य (शासन) कन्नौज से लेकर वाराणसी तक शासन कर रहा था।

वाराणसी की पवित्र भूमि के कणों-कणों की देश और धर्म के प्रति पूर्णतः निष्ठावान धूली भी उस पापी जयचन्द्र का मनः स्थूल परिवर्तन नहीं कर पायी थी, और वह देश प्रेम के प्रति कृतघ्नता कर गया था। माँ भारती की कुदृष्टि/कुदृष्टि और उसे अपने किये गये पापकर्म का दण्ड देने के लिए क्रूर काल ने अपने पंजों में जकड़ना शुरू कर दिया था। ऐबक ने अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ भारत के कई नगरों और बहुत से गाँवों को लुटता और मारकाट करता हुआ तेजी से कन्नौज की ओर बढ़ता गया।

इसके बाद बात करते हैं, ऐबक के सैन्य अभियान के बारे में :
उसने गोरी के सहायक के रूप में कई क्षेत्रों पर सैन्य अभियान में हिस्सा लिया था। तथा इन अभियानों में उसकी मुख्य भूमिका रही थी। इससे खुश होकर गोरी ने उसे, उस क्षेत्र का मुखिया नियुक्त कर दिया था। महमूद गोरी विजय के बाद राजपुताना में राजपुताना राजकुमारों के हाथ सत्ता सौंप गया था पर राजपूतों तुर्कों के प्रभाव को नष्ट करना चाहते थें। सर्वप्रथम 1195 में उसने अजमेर तथा मेरठ में विद्रोहों का दमन/खत्म किया तथा दिल्ली